

समकालीन हिंदी कहानी में वृद्ध-उपेक्षा का यथार्थः पारिवारिक द्वंद्व और संरचनात्मक अवदान

डॉ० पवन कुमार त्रिवेदी

सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बीसलपुर, पीलीभीत

(एम.जे.पी. रुहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली)

शोध-सार: प्रस्तुत शोध पत्र समकालीन हिंदी कहानी के संदर्भ में पारिवारिक उपेक्षा झेल रहे वृद्ध पात्रों की दोहरी भूमिका का आलोचनात्मक और आख्यान-शास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत करता है। सामान्यतः वृद्ध-विमर्श को केवल समाजशास्त्रीय विषमता या करुणा-उत्पादक विषय-वस्तु के रूप में देखा जाता है। किंतु यह अध्ययन यह प्रतिपादित करता है कि समकालीन कहानियों में 'वृद्धों की पारिवारिक उपेक्षा' केवल एक सामाजिक यथार्थ नहीं, बल्कि कहानी के 'कथानक-विन्यास' (Plot Architecture) और 'आख्यान-गतिशीलता' को निर्मित करने वाला प्राथमिक संरचनात्मक घटक है। शोध पत्र में यह विश्लेषित किया गया है कि किस प्रकार वृद्ध-उपेक्षा से उपजा पारिवारिक अंतर्द्वंद्व कथानक में तनाव, उत्कर्ष और चक्रात्मक समाप्ति को जन्म देता है।

कुंजी-शब्द: वृद्ध-विमर्श, आख्यान-संरचना, पारिवारिक द्वंद्व, संरचनात्मक अवदान, समकालीन हिंदी कहानी, हाशियाकरण, कथानक-विन्यास।